मिट्टी की पुकार

दुनिया के सबसे अनोखा और सुंदर,
माँ प्रकृति फैलाती खुशी सबके अंदर।
पेड़ों से भरा हुआ है इसकी परिधान,
मिट्टी, जलधि आदि है इसकी वरदान।

इस मिट्टी का भी है एक दास्तान,
जो रह गई है सालों से अनजान।
मिट्टी की सुगंध मिटाती सबकी थकान,
यही बनता अनेक जीवों के मकान।

किसान खेतों में अपने सपने बोते,
यही मिट्टी उनके मंज़िल बनते।
यही से जीवन का अंत और आरंभ,
लोग अपने प्रतीक्षा का करते शुभारंभ।

इसमे ही जंगें लड़ी जाती है,
अनेक लोगों के आँसू बह जाती है।
यही मिट्टी है सबका अरमान
सैनिक देते अपना जीवन कुर्बान।

प्रकृति आज कुछ कह रही है,
सालों से दबे सच को सह रही है।
बढ़ती आबादी ने पेड़ों को काटा,
ज़मीन को टुकड़े-टुकड़े में बाँटा।

फिर प्रकृति ने लिया अपना रूप भयानक,
पानी में डूब गई संसार अचानक।
तूफ़ान ने उड़ाया सबका अहंकार,
देखा मनु ने अवनी की महाकार।

मिट्टी आज रो रही है,
अपनी अस्तित्व खो पड़ी है।
अब तो सुनो मिट्टी की पुकार,
मत बनो अधर्म का शिकार।

डरते मनु पेड़-पौधे लगाने लगे,
कुपित धरा को शांत कराने लगे।
अपने गलती का एहसास हुआ,
इस पल से नई इनसान का जन्म हुआ।

Item Code: 958 Participant Code: 047

चलो मिलकर कसम ये खाएँ,
धरती को हरियाली से सजाएँ।
मिट्टी आज कुछ कह रही है,
दर्द सहकर भी मुस्कान फैला रही है।

जब सुनी जाएगी मिट्टी की पुकार
इनसान फिर से इनसान बन जाएगी।